आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:29-10-14

हम बच्चों को हर रोज ज्ञान-अमृत पिलाकर आत्म-अभिमानी बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारी याद की यात्रा बुद्धि की है, इसे ही रुहानी यात्रा कहा जाता है, तुम अपने को आत्मा समझते हो, शरीर नहीं, शरीर समझना अर्थात उलटा लटकना.

परमपिता-परमात्मा द्वारा स्थापित यह रुहानी विधालय में हमें तीन बातों का ज्ञान दिया जाता है - मैं कौन? मेरा कौन? और मुझे क्या करना है?

मैं कौन? – मैं आत्मा हूँ. यह बात हमारे मन में पक्की करना. वैसे मन तो आत्मा की सूक्ष्म कर्मेन्द्रिय है. लेकिन द्वापर से जब माया का राज्य शुरु होता है तो माया क्या करती है? माया आत्मा को धीरे-धीरे काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार जैसे विकारों में फँसाती जाती है और उसके लिए सबसे पहले आत्मा की यह सूक्ष्म कर्मेन्दियां, मन और बुद्धि को अपने तरफ कर लेती हैं. फिर हमारा मन, आत्मा के नियंत्रण में न रहकर माया के नियंत्रण में चला जाता है और समझता है मैं यह शरीर हूँ. माया बुद्धि को भी भ्रष्ट कर देती हैं. बुद्धि में सत्य को परख ने की शक्ति खत्म हो जाती है और माया के नियंत्रण में आकर अपने सत्य स्वरूप आत्मा को भूल कर, मैं यह शरीर हूँ यही मान कर चलता हैं. इसको कहा जाता है - देह-अभिमानी. अभी यह ईश्वरीय ज्ञान मुझे वापस आत्म-अभिमानी बना रहा हैं.

मेरा कौन? - अभी संगमयुग में परमात्मा स्वयं आकर हमारी सोई हुई आत्मा को जगाते हैं और कहते है - हे आत्मा, तुम राजा हों. मन और बुद्धि तो तुम्हारी कर्मेन्दियां हैं यानी तुम्हारे कर्मचारी हैं. हे आत्मा - मैं तुम्हारा पिता हूँ. हे आत्मा - जब तुम मेरे पास अपने घर परमधाम में थी तो कितनी सुंदर, निर्विकारी थी. अब माया ने तुम्हारा कितना बुरा हाल कर दिया है. तुम यह माया के चुंगल में फँसकर सम्पूर्ण काली, विकारी बन गई हो. तुम अपने राजाई को भी गँवा चुके हो. अब तुम मेरे साथ योग लगाकर वापस सम्पूर्ण निर्विकारी बन जाओ. हे आत्मा - मैं रचयिता हूँ. तुम मेरा कहा मानकर मेरी श्रीमत् पर चलोगे तो में तुम्हें अपनी रचना - सतयुग और त्रेतायुग - का मालिक बनाऊँगा. वहाँ तुम्हें कोई विकार परेशान नहीं करेंगे. तुम अपना मनुष्य जीवन में सम्पूर्ण निर्विकारी रहकर, सुख-शांति से बिताओगे.

मुझे क्या करना है? - रचयिता बाप ने मुझे आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान दिया हैं. बाबा ने बताया कि मैं आत्मा जब बाबा के पास परमधाम में थी तो सर्वगुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण निर्विकारी थी. मेंने इस सृष्टि चक्र के शुरुआत में सतयुग में पहले-पहले अपना पार्ट बजाना शुरु किया तभी में सर्वगुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण निर्विकारी थी. सतयुग-त्रेता, दो बड़े युग में आत्मा ने सम्पूर्ण सुख और शांति में रहकर अपना पार्ट बजाया. फिर जैसे-जैसे सतयुग-त्रेता में और जन्म लेती गई तो मेरी पवित्रता थोड़ी-थोड़ी कम होती गई. फिर ड्रामा अनुसार जब द्वापर से माया का राज्य चालू हुआ तो में आत्मा विकारों में फँसती गई. कलियुग के अन्त में मैं आत्मा सम्पूर्ण विकारी बन गई और मेरे सब गुणों और शक्तियां क्षीण हो गई. अब मेरे पिता ने आकर मेरा हाथ अपने हाथों में लिया हैं. उन्होंने मुझे वापस सर्वगुण सम्पन्न, सोलेकला सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण निर्विकारी बनने का रास्ता बताया है. वह सर्वशक्तिमान बाप ने मुझे याद की यात्रा सिखलाकर वापस मुझे दिव्य-गुणों और आत्मिक शक्तियों से भरपूर कर रहे हैं. बाबा ने मुझे राजयोग का ज्ञान देकर वापस अपनी ही कर्मेन्दियो, मन और बुद्धि पर राज्य करना सिखाया हैं. अब मैं आत्मा वापस बाबा की श्रीमत् पर चल कर अपने में देवी-गुणों को भी धारण कर रही हूँ.

ॐ शांति.